India and Turkmenistan - 30 years of Partnership

India enjoys friendly and historical ties with Turkmenistan. Archaeological finds in South Turkmenistan including near Ashgabat have revealed their contacts with Indus Valley Civilization. Traces of Soma drink preparation (mentioned in Rig Veda) in the ruins of Gonur Depe archeological site in Mary province supports the theory of early civilizational links between the two countries. Sanskrit Buddhist manuscripts, coins and Buddha statue found in the ruins of Merv (Mary province) suggest continuity of cultural and trade linkages. 'Turkmen Gate' built in Delhi in memory of great Turkmen Saint Shams-ul-Arifeen Shah Turkmen Bayabani, who is believed to have lived in India during 13th century, also bears testimony to this friendship.

In modern times bilateral relations have been strengthened by regular high-level visits. Hon'ble President of Turkmenistan Gurbanguly Berdimuhamedov visited India in May 2010. Hon'ble Prime Minister of India, Shri Narendra Modi visited Turkmenistan in July 2015. During these visits, several significant MoUs and agreements were signed covering areas such as Science & Technology, Defence, and Tourism etc.

Indian movies and TV serials are popular with Turkmen people. Similarly, Indian music especially Hindi songs also hold a special place in the hearts of Turkmen people. Indian film festivals are held on regular basis in different cities in Turkmenistan. 'India Cultural Week' including exhibition, dance performance, film and food festival was celebrated in Ashgabat in May 2017 to mark the 25th anniversary of diplomatic relations between India and Turkmenistan.

Central Asia's first Yoga and Traditional Medicine Centre was inaugurated by Hon'ble Prime Minister of India in Ashgabat in July 2015. A Yoga Teacher and an Ayurveda Expert have been deputed to the Centre from India and offer classes / consultations to interested people. They also teach at the State Medical University of Turkmenistan, Ashgabat.

India provides training for Turkmen nationals under its Indian Technical and Economic Cooperation (ITEC) programme. Since the inception of the programme for Turkmenistan in 1994, over 400 Turkmen nationals have been trained in various courses. In addition, Indian Council for Cultural Relations (ICCR) provides Scholarships to students from Turkmenistan to pursue graduation, post-graduation and Ph.D. There are currently over 300 students from Turkmenistan pursuing their higher education in various reputed universities in India. In 2010, a Hindi Chair was established by India in Azadi Institute of World Languages, Ashgabat where Hindi is being taught to around 50 university students.

The joint issue of Commemorative Postage Stamp celebrates this natural friendship of India and Turkmenistan through the traditional art of singing and dancing i.e. Sankirtana and Kushtdepdi. These traditional dance and singing forms of India and Turkmenistan are part of UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity

Sankirtana encompasses an array of arts performed to mark religious occasions and various stages in the life of the Vaishnava people of the Manipur plains. Sankirtana practices Centre on the temple, where performers narrate the lives and deeds of Krishna through song and dance. Sankirtana works in harmony with the natural world, whose presence is acknowledged through its many rituals.

Kushtdepdi is a performing art involving creative poeticizing focused on good feelings and wishes. It involves singing with vocal improvisation and dancing with movements of the hands, gestures and footsteps in accordance with the tune of the song. The rite serves as a tool for conveying good wishes and is an inseparable part of ceremonies and national celebrations.

Department of Posts is delighted to commemorate the 30 Years of establishment of diplomatic relations between India and Turkmenistan through the Joint Issue of Commemorative Postage Stamp.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Shri Brahm Prakash
Text	:	Referenced from contents provided by Ministry of External Affairs

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

भारत और तुर्कमेनिस्तान – साझेदारी के 30 वर्ष
India and Turkmenistan - 30 Years of Partnership

विवरणिका BROCHURE

भारत और तुर्कमेनिस्तान : साझेदारी के 30 वर्ष

भारत और तुर्कमेनिस्तान के बीच मैत्रीपूर्ण और ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। अश्गाबात के निकटवर्ती क्षेत्रों सहित दक्षिण तुर्कमेनिस्तान में मिली पुरातात्विक महत्व की वस्तुओं से यह बात उजागर हुई है कि इस क्षेत्र के निवासियों का सिंधु घाटी सभ्यता के साथ संपर्क रहा था। मेरी प्रांत में गोनूरडेप पुरातत्व स्थल के खंडहरों में सोमरस (जिसका उल्लेख ऋग्वेद में है) तैयार करने के प्रमाण भी मिले हैं, जो दोनों देशों की प्राचीन सभ्यताओं के बीच संबंधों की पुष्टि करते हैं। मर्व (वर्तमान मेरी) के खंडहरों में मिली संस्कृत एवं बौद्ध पांडुलिपियां, सिक्के और बुद्ध की प्रतिमा हमारे सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों की निरंतरता का संकेत देते हैं। महान तुर्कमानी संत शम्स–उल–आरिफीन शाह तुर्कमानबयाबानी, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे 13वीं शताब्दी के दौरान भारत में रहे थे, की याद में दिल्ली में बनाया गया 'तुर्कमानगेट' भी दोनों देशों की मैत्री का सशक्त प्रमाण है।

आधुनिक दौर में, दोनों देशों के बीच नियमित उच्च स्तरीय यात्राओं ने भारत और तुर्कमेनिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाया है। तुर्कमेनिस्तान के माननीय राष्ट्रपति गुरबांगुली बर्दीमुहमेदोव ने मई 2010 में भारत का दौरा किया। इसके बाद भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जुलाई 2015 में तुर्कमेनिस्तान की यात्रा की। इन यात्राओं के दौरान, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, रक्षा, पर्यटन आदि के क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों और करारों पर हस्ताक्षर किए गए।

भारतीय फिल्में और टीवी धारावाहिक तुर्कमानी लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। इसी प्रकार, भारतीय संगीत, विशेषकर हिंदी गीतों के लिए भी तुर्कमानी लोगों के दिलों में खास जगह है। तुर्कमेनिस्तान के विभिन्न शहरों में भारतीय फिल्म समारोह नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। भारत और तुर्कमेनिस्तान के बीच राजनयिक संबंधों की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर मई 2017 में अश्गाबात में 'भारतीय संस्कृति सप्ताह' मनाया गया। इस समारोह के दौरान प्रदर्शनी, नृत्य, फिल्म और फूड फेस्टिवल आयोजित किए गए।

जुलाई 2015 में भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा मध्य एशिया के पहले योग और पारंपरिक चिकित्सा केंद्र का अश्गाबात में शुभारंभ किया गया। इस केन्द्र में भारत से एक योग शिक्षक और एक आयुर्वेद विशेषज्ञ को भी नियुक्त किया गया है, जो इच्छुक लोगों को कक्षाएं/परामर्श प्रदान करते हैं। साथ ही ये शिक्षक एवं विशेषज्ञ, तुर्कमेनिस्तान की स्टेट मेडिकल यूनिवर्सिटी, अश्गाबात में शिक्षण का कार्य भी करते हैं।

भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आई.टी.ई.सी.) कार्यक्रम के तहत भारत, तुर्कमानी नागरिकों को प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। 1994 में तुर्कमेनिस्तान के लिए इस कार्यक्रम की शुरुआत से अब तक 400 से भी अधिक तुर्कमानी नागरिकों को विभिन्न पाठ्यक्रमों के अंतर्गत प्रशिक्षित किया गया है। इसके अलावा, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आई.सी.सी.आर.) तुर्कमेनिस्तान के छात्रों को स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करता है। वर्तमान में तुर्कमेनिस्तान के 300 से अधिक छात्र भारत के विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। 2010 में, भारत द्वारा आज़ादी इंस्टीट्यूट ऑफ वर्ल्ड लैंग्वेजेज, अश्गाबात में एक हिंदी चेयर की स्थापना की गई, जहां लगभग 50 विश्वविद्यालयी छात्रों को हिंदी की शिक्षा प्रदान की जा रही है।

यह संयुक्त स्मारक डाक–टिकट, भारत और तुर्कमेनिस्तान की इस स्वाभाविक मैत्री को गायन और नृत्य की पारंपरिक कला अर्थात् संकीर्तन और कुष्ट्देपडी के माध्यम से चित्रित करता है। भारत और तुर्कमेनिस्तान की ये पारंपरिक नृत्य और गायन शैलियां, यूनेस्को की 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची' में भी शामिल हैं।

संकीर्तन के अंतर्गत मणिपुर के मैदानी इलाकों में रहने वाले वैष्णव सम्प्रदाय के लोगों की जीवन शैली के विभिन्न चरणों तथा विविध धार्मिक अवसरों पर प्रदर्शित की जाने वाली कलाओं की एक पूरी श्रृंखला शामिल होती है। संकीर्तन परंपरा का केंद्र मंदिर होते हैं, जहां कलाकार अपने गीत और नृत्य के माध्यम से कृष्ण के जीवन और लीलाओं का वर्णन करते हैं। संकीर्तन प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करता है और इस कला शैली के अंतर्गत अनेक अनुष्ठानों के माध्यम से प्रकृति के प्रति आभार भी प्रकट किया जाता है।

कुष्ट्देपडी एक प्रकार की अभिनय कला है, जिसमें सद्भावनाओं और शुभकामनाओं की काव्यात्मक अभिव्यक्ति की जाती है। इसमें नए–नए तरीकों से आवाजें निकालते हुए गीत गाए जाते हैं और गाने की धुन के अनुसार, हाथों की मुद्राओं, संकेतों और कदमताल के साथ नृत्य किया जाता है। यह कला, शुभकामनाएं व्यक्त करने का एक माध्यम भी है और आयोजनों तथा राष्ट्रीय उत्सवों का एक अभिन्न अंग भी।

डाक विभाग, भारत और तुर्कमेनिस्तान के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 30 वर्ष पूरे होने के अवसर पर संयुक्त स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्री ब्रह्म प्रकाश
विवरणिका/विरूपण कैशे

पाठ : विदेश मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 2500 पैसे (2)
Denomination	: 2500 p (2)
मुद्रित डाक–टिकटें	: 201600 (संकीर्तन पर)
Stamps Printed	: 201600 (on Sankirtana)
मुद्रित मिनीयेचर शीट्स	: 111000
Miniature Sheets Printed	: 111000
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00